हिन्दी विभाग, गया कॉलेज, गया की वार्षिक पत्रिका

ज्ञान-वर्तिका

सितम्बर, 2023 अंक-2

मूल्य : 60 रुपये

हिन्दी विभाग के सहयोग से बनी और ट्विंकल रक्षिता द्वारा निर्देशित तथा पुरस्कृत शॉर्ट फिल्म 'एक पल की गुस्ताख़ी' के दृश्य

बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति, पटना

राज्य स्तरीय युवा चलचित्र लघु फिल्म प्रतियोगिता : 2022-23

बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति, पटना के द्वारा युवाओं में एच. आई. वी. एवं अन्य संबंधित स्वास्थ्य विषय पर जागरूकता हेतु राज्य स्तरीय युवा चलचित्र लघु फिल्म प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में कुल 76 लघु फिल्म समिति को तय समय के अंदर प्राप्त हुआ है। इस प्रतियोगिता में नियमानुसार 07 श्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार हेतु चयन किया जाना था। इस हेतु समिति के द्वारा गठित विद्वान न्याय मंडल के सदस्यों द्वारा राज्य स्तरीय युवा चलचित्र लघु फिल्म प्रतियोगिता में प्राप्त सभी फिल्मों की विश्लेषण Subtitle, Acting, Theme Related Content, Information के आधार पर की गई। सभी प्राप्त फिल्मों के लिए युवाओं के द्वारा किए गए प्रयास को सराहा गया है। न्याय मंडल के सदस्यों द्वारा नियमानुसार दिए गए अंकों के आधार पर श्रेष्ठ 07 फिल्मों का चयन किया गया। बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति, पटना के द्वारा सभी 07 श्रेष्ठ चयनित लघु फिल्म पुरस्कार विजेताओं को प्रति फिल्म पुरस्कार के रूप में रुपया 10,000 (दस हजार) मात्र दिए जाने का एवं सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देने का निर्णय लिया गया है। लघु फिल्म के आवेदन में अंकित छात्र-छात्रा को PFMS के माध्यम से पुरस्कार राशि उनके बैंक खाता में हस्तांतरण किया जाएगा। प्रतियोगिता के चयनित श्रेष्ठ 07 फिल्मों की सूची निम्नवत है :-

क्र. सं.	प्रतिभागी का नाम	महाविद्यालय का नाम	विश्वविद्यालय का नाम	जिला
01	अमरजीत कुमार	नीतीश्वर महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर	भीम राव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर	मुजफ्फर
02	सलोनी कुमारी	कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एवं साइंस, पटना	पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना	पटना
03	ट्विंकल कुमारी	गया महाविद्यालय, गया	मगध विश्वविद्यालय, गया	गया
04	तबसी कुमारी	पुर्णिया महिला महाविद्यालय, पुर्णिया	पुर्णिया विश्वविद्यालय, पुर्णिया	पुर्णिया
05	राजश्री रॉय	पटना वुमेन्स कॉलेज, पटना	पटना विश्वविद्यालय, पटना	पटना
06	कृष्णा कुमार	बी. डी. कॉलेज, पटना	पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना	पटना
07	श्वेता कुमारी	आर. एस. एस. महिला कॉलेज, सीतामढ़ी	भीम राव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर	सीतामढ़ी

हस्ताक्षर
डॉ. नरेंद्र कुमार गुप्ता
अपर परियोजना निदेशक

प्रकाशक : हिंदी विभाग, मानविकी भवन, गया कॉलेज, रामपुर, गया-823001 (बिहार)
मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, मकान नं.-33, सेक्टर ए-5/6, यूपीएसआयीडीसी एरिया, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

सितम्बर, 2023 अंक-2

सहयोग राशि : 60 रुपये

ज्ञान-वर्तिका

हिन्दी विभाग, गया कॉलेज, गया की वार्षिक पत्रिका

संरक्षक

प्रधानाचार्य, गया कॉलेज, गया

प्रधान संपादक

डॉ. अभय नारायण सिंह
(विभागाध्यक्ष, हिन्दी, गया कॉलेज, गया)

संपादक

ट्विंकल रक्षिता

परामर्शदाता

डॉ. आनंद कुमार सिंह
डॉ. सोनू अन्नपूर्णा
डॉ. श्रीधर करुणानिधि
डॉ. जितेन्द्र कुमार
डॉ. रवि कुमार
डॉ. प्रियंका कुमारी
डॉ. गोलोक बिहारी श्रीवास्तव

कवर/लेआउट

दिनेश कुमार : 9319932267

आंतरिक साज-सज्जा सहयोग : संदीप कुमार
आवरण चित्र : ज्ञानी कुमार
रेखांकन : हंस एवं कथादेश से साभार

♦

संपादकीय कार्यालय

हिन्दी विभाग, मानविकी भवन
गया कॉलेज, रामपुर, गया,
पिन-823001 (बिहार)
फोन नंबर : 0631-2222435
मो. : 9934297586
Email : hindivibhaggcg@gmail.com

♦

प्रकाशक : हिंदी विभाग, मानविकी भवन, गया कॉलेज, रामपुर, गया-823001 (बिहार)
मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स।
मकान नं.-33, सेक्टर ए-5/6, यूपीएसआयीडीसी एरिया, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

यह अंक

सम्पादकीय 02

विरासत

संजय सहाय : अविश्वसनीय 04

कहानियाँ

अनिता भारती : हमारा बीज बैंक 11
मिथिलेश प्रियदर्शी : हत्या की कहानियों का कोई शीर्षक नहीं होता 17
संदीप मील : जादू का गुलाब नबी 24
निहाल पराशर : काले होंठ 32
माधव राठौड़ : इमली फाटक के उस पार 34
सुशांत मोहन : यह वही आदमी है 38

कविताएँ 41

राजेंद्र नागदेव, रमेश ऋतंभर, वंदना टेटे, अरुणदेव, विनय सौरभ, मुसाफिर बैठा, पंकज चौधरी, अरविन्द पासवान, संजना तिवारी, ज्योति स्पर्श, वीरचन्द्रदास बहलोलपुरी, बिभाश कुमार, रंजु राही, यतीश कुमार, नरेन्द्र कुमार, प्रत्यूष चन्द्र मिश्र, अजय दुर्जेय, राजू मस्ताना, राजेश कमल, ग़ज़ाला तबस्सुम, श्रीधर करुणानिधि, ट्विंकल रक्षिता, अतुल कुमार सिंह, संदीप कुमार, सुशील पाठक, सुरभि कुमारी, उत्तम प्रताप, सुमन कुमारी, राहुल कुमार मिश्रा, निधि कुमारी

आलेख

रणेन्द्र : मुंडारी रामायण से गुजरते हुए सीता से भेंट 76
संजीव चंदन : अहिंसक समावेशी दलित स्त्रीवाद : वैचारिकी संघर्ष... 83
डॉ. अनुज लुगुन : तिरिल : एक पेड़ और उससे जुड़े लोगों की कथा 86
डॉ. कर्मानंद आर्य : अनकही आवाजों के बीच कही हुई आवाजों की कवितायें 88
डॉ. अभय नारायण सिंह : मिथिला की संस्कृति और मैथिली लोकगीत 94
डॉ. गोलोक बिहारी श्रीवास्तव : लोक संस्कृति का महत्व 97
डॉ. रवि कुमार : भक्तिकालीन समाज में संप्रदाय 99
अनुरंजनी : पितृसत्ता के कितने रूप 101
ज्ञानी कुमार : विनोद कुमार शुक्ल : आदिवासियों सी विनम्र अभिव्यक्ति 103

रिपोर्ट

डॉ. सोनू अन्नपूर्णा : हिन्दी विभाग की गतिविधियों की वार्षिक रिपोर्ट 106

ट्विंकल रक्षिता

यह दूसरा वर्ष है हमारी विभागीय पत्रिका का। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद हम इस कार्य में सफल हुए यह हम सबों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। प्रतिकूल परिस्थितियों का तात्पर्य है कि जिस प्रकार वर्तमान समय में हर तरफ अराजकता की स्थिति बनी हुई है जिससे हमारी शिक्षा व्यवस्था भी अछूती नहीं है। पिछले कुछ वर्षों को देखते हुए मुझे एक गाने की कुछ पंक्तियां याद आती हैं कि ''ये क्या हुआ, कैसे हुआ, कब हुआ...छोड़ो ये न पूछो।'' पर पूछना तो पड़ेगा, आज नहीं तो कल। साहित्य हमेशा सवाल खड़े करता है और हमेशा समाज और मनुष्यता की बेहतरी के ये सवाल बेचैन और परेशान करते हैं। साहित्य पढ़ने वालों पर जिम्मेदारी और अधिक है। उन्हें यह समझना होगा कि अपनी लेखनी में रचनात्मकता को स्थान देते हुए अपनी बात कैसे जारी रखें? साथ ही समय-समय पर हो रहे बदलाव, वो या तो साहित्य की भाषा हो या साहित्य की धारा उसे स्वीकार या अस्वीकार करने से पहले कैसे एक खुला विचार विमर्श करें? खुलेपन और वैचारिक विमर्श की परंपरा को नष्ट न होने दें। साहित्य का सृजन खुद में एक प्रतिरोध है...

प्रेमचंद ने प्रगतिशील लेखक संघ की बैठक में कहा था कि साहित्य राजनीति के आगे जलने वाली मशाल है। वह राजनीति का पिछलग्गू नहीं है। वह उसे रास्ता दिखाता है। साहित्य के इस गुणधर्म की अभी के समय में सबसे अधिक जरूरत है। शायद प्रेमचंद के युग से भी अधिक।

बात साहित्य की होगी तो साहित्य की भाषा पर बात किए बिना कैसे रहा जा सकता है? हिंदी भाषी होने के कारण इस भाषा की कमियों-खूबियों और आगे की राह पर बात करना हमारी जरूरत है। पर उससे पहले जरूरी है हर प्रकार के पूर्वाग्रहों को पीछे छोड़ते हुए एक नई दृष्टि के साथ विचार करना। सोचिए, क्या वजह है कि हिंदी भाषा के जानकार होने के वाबजूद कार्यालयी हिंदी हमें उबाऊ लगती हैं जबकि इसी हिन्दी भाषा की फिल्में हम बड़े मजे से देखते हैं। सिविल सेवा की परीक्षाओं में हिंदी शब्द का मतलब समझने के लिए हमें उसका अंग्रेजी अनुवाद देखना पड़ता है। न्याय की भाषा, कानून की भाषा, संसद की भाषा आदि में हमारे सामने जो भाषा है अर्थात हिन्दी, वह अनुवाद की हिन्दी है। इसका मूल पाठ अंग्रेजी है। हिन्दी भाषा की सर्वग्राह्यता का सवाल महत्वपूर्ण है। ज्ञान-विज्ञान, कानून, कार्यालय सहित कंप्यूटर की भाषा के रूप में इसकी उत्तरोतर वृद्धि का प्रश्न और उसके प्रचार-प्रसार की जबाबदेही महत्वपूर्ण है।

साहित्य की भाषा को हमेशा से सर्वग्राह्य होना चाहिए लेकिन पूर्व में भी हमसे गलतियां हुई और हम अपनी भाषा को अलंकृत करने के चक्कर में ये भूल गए कि हमारे यहां एक बहुत बड़ा वर्ग इस भाषा को जानने और समझने में असमर्थ है। किसी भी भाषा का साहित्य तभी लोकप्रिय माना जाता है जब वह पाठकों को समझ आए,उसकी भाषा सहज हो। यह वक्त पश्चिमी साहित्य से तुलना करके खुद को कमतर या श्रेष्ठ दिखाने का नहीं है बल्कि सफ़ेद पन्नों का उपयोग कर अपने यथार्थ को उकेरने का है। हमारे समय को जाति, धर्म, राजनीति के ब्लैकहोल में दफ़न होने से बचाने का है ताकि हम अपने आने वाली पीढ़ियों को एक सच्चा ब्योरा दे सकें। जिस प्रकार एक उहापोह में हमारी पीढ़ी फंस चुकी है ऐसी स्थिति का सामना उन्हें न करना पड़े। बड़ा खौफ होता है जब पता चलता है कि इस मशीनीकरण के दौर में मानवीय संवेदना भी एक कंप्यूटर जैसे डब्बे में बंद हो जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की माने तो अब मशीन सभी संवेदनाओं को समेटते हुए बेहतर रचनाएं रच सकती है ऐसे में एक आम इंसान जिसमें कि साहित्यकार भी शामिल हो सकते हैं उनका अस्तित्व कहां तक सुरक्षित है! मानव प्रजाति सबसे समझदार

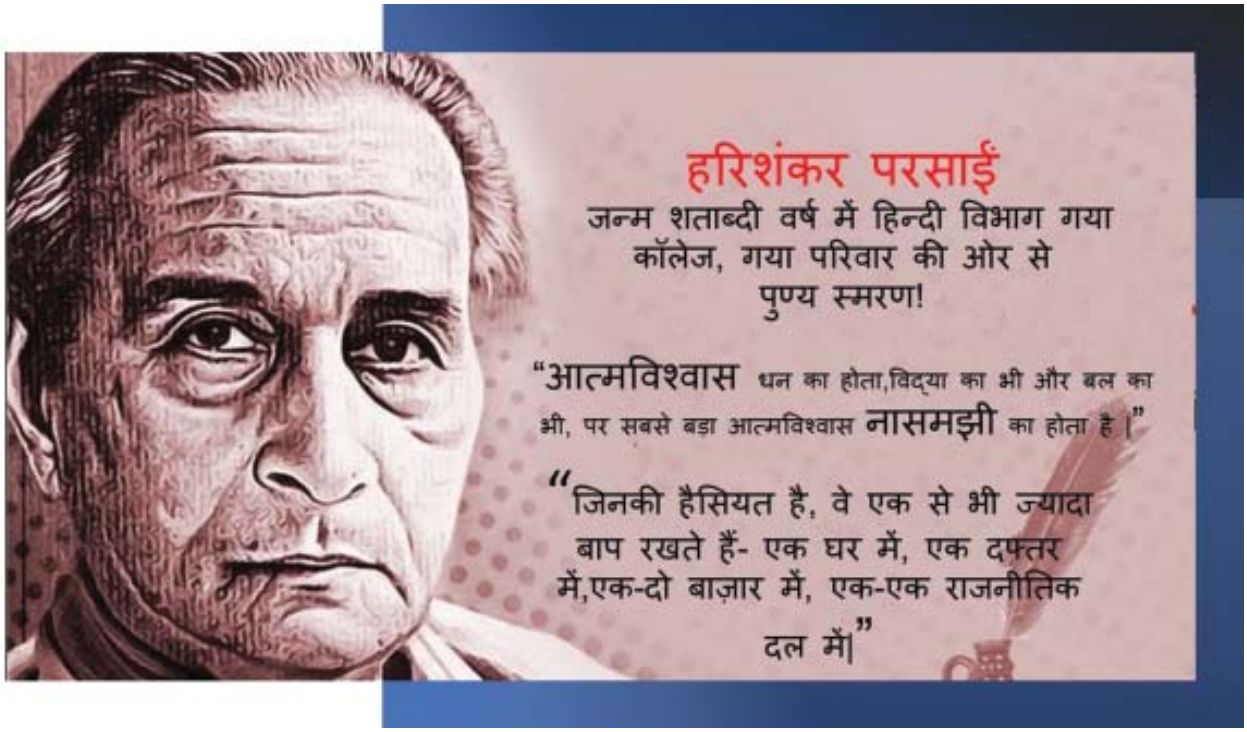

मानी जाती है और इसका आधार उसकी सोचने समझने की शक्ति, अन्य जीवों के प्रति दयालुता और पूरी मानव प्रजाति के प्रति संवेदना के स्तर पर है। ऐसे में अपनी तमाम मानवीय मूल्यों को अपने भीतर सहेज कर ही उस मशीन को पीछे छोड़ा जा सकता है और अपने अस्तित्व की रक्षा की जा सकती है। हम जब जब प्रकृति द्वारा अपने लिए निर्धारित क्षमता को भूलकर अपनी हदें पार करेंगे तब तब हमें ऐसे ही समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और निरंतर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ेगी।

अब जब बार-बार अस्तित्व की बात हो रही है तो ऐसे में इस समाज के भीतर दलित और स्त्रियों की स्थिति से हम सभी वाकिफ हैं। तमाम रचनाएं लिखीं गई दोनों के लिए, न जाने कितने विमर्श किए गए, सरकार ने कितनी मुहिमें चलाईं, नेताओं ने भरसक अपने भाषणों से उनका दिल जीता और वोट भी। पर इन तमाम प्रयासों के वावजूब हर दिन ऐसी सैकड़ों घटनाएं देखने सुनने को मिलती हैं जहां किसी दलित के मुंह पर पेशाब किया जाता है तो कहीं हजारों पुरुषों की भीड़ एक नंगी स्त्री को सबसे आगे रख कर जुलूस निकालती है। विचारिए कि हम किस गर्त में जा रहे हैं? क्या इन अमानवीय कृत्यों के आधार पर हमारा भारत शीर्ष स्थान पर पहुंचेगा और अगर पहुंच भी गया तो क्या हम ब्यौरे में इन घटनाओं को लिखेंगे! ऐसे में फिर क्यों न ले मशीनें मनुष्यों की जगह? जहां हम एक दूसरे पर खुली आंखों से भरोसा नहीं कर सकते वहां मशीनें ही ठीक हैं शायद। हमें ये भी नहीं भूलना चाहिए कि ज्यों ज्यों हम अपनी नैतिकता, मानवीयता और संवेदना भूलेंगे त्यों-त्यों मशीनें ही हमारी जगह लेंगी।

...ऐसे समय में हिंदी विभाग, गया कॉलेज, गया द्वारा किए जा रहे सभी प्रयास सराहनीय हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस विभाग ने अनेक आयोजन करवाए हैं साथ-ही-साथ यह विभाग अपने विद्यार्थियों को एक बेहतर शैक्षणिक माहौल देने में खुद को सक्षम साबित कर रहा है। यहां विद्यार्थियों को एक खुला वातावरण मिलता है जिससे वो स्वयं अपना सर्वांगीण विकास कर पाते हैं और हर विषय पर एक खुली बहस करने के लिए भी खुद को तैयार करते हैं। यह सब संभव हो पाता है शिक्षक और छात्रों के परस्पर सहयोग से। लेकिन आप अगर पुराने गुरु-शिष्य परम्परा के उपासक है तब आपको थोड़ी निराशा हो सकती है क्योकि यहाँ शिक्षक और छात्र आमने-सामने बैठ कर देश-दुनिया के तमाम मुद्दों पर अपने विचार रखते हैं और सामने वाले कि विचारों को सुनते हैं। तमाम निराशाओं के बीच यह विभाग शिक्षा के माध्यम से आशा की एक नई किरण ढूंढने की निरंतर कोशिश कर रहा है। हम सब इस हिन्दी परिवार के अंग हैं और हमें पूरा विश्वास है कि यह हिन्दी परिवार अपने छोटे-छोटे क़दमों से नई-नई ऊँचाइयों को छूने में जरूर सफ़ल होगा।

आमीन!

हिन्दी दिवस की शुभकामनाओं के साथ...

■

अविश्वसनीय

•

संजय सहाय

वह सचमुच कैसी थी, मैं नहीं जानता। जानने का साधन भी नहीं है। चूँकि वह न तो किसी सनसनीखेज अखबारी हादसे का शिकार हुई थी, न ही राजनीति की बिसात का वह मोहरा बनी थी और न ही 'नारी मुक्ति' जैसे आंदोलनों में उसकी कोई भूमिका रही थी। बेशक वह उसके बहुत पहले की चीज थी। अतः उसके बारे में प्रामाणिक अथवा अप्रामाणिक, किसी भी प्रकार के अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं, सिर्फ अटकलें ही लगाई जा सकती हैं और कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि वह सिर्फ एक बहाना भर थी...कि उसके बहाने कई तरह की बहसें छेड़ी जा सकती हैं।

उससे भी पुराना, भीड़-भरे इलाके में एक विशाल भवन है। हालाँकि उसके खड़ी धारियों वाले गोलाकार स्तंभ ग्रीस के एक्रोपोलिस या यूनानी रोमी काल की क्लासिकल वास्तुकला की याद दिलाते हैं, पर फिर भी लोग उसे विक्टोरियन शैली का भवन समझते हैं। यह बात दीगर है कि चाय परचून के दड़बों से घिरकर उसकी भव्यता भोथरा गई है और उसके जीनों कोनों में बजबजाते पीक, थूक, खखार के अंबार और पेशाब की तीखी गंध साम्राज्यवादियों से लिया जा रहा हमारा 'भयानक बदला' है। चूँकि उससे बेहतर कुछ पेश करने की औकात नहीं है। लोग विक्टोरियन काल के उस ग्रीको-रोमन नमूने पर मूत-मात कर संतुष्ट हो लेते हैं। इसी भवन में पुरातत्त्व विभाग का दफ्तर है, जहाँ मैं नौकरी बजाता हूँ और जहाँ कुछ दिनों पहले, अर्साबाद अविनाश से मुलाकात हुई थी। शेखी बघारने के क्रम में मैंने तरह-तरह की अनर्गल बातें बड़े नाटकीय ढंग से बताई थी—बेपर की खूब उड़ाई थी, जिसका नतीजा था कि यह आफत मेरे गले पड़ी।

जहाँ तक मुझे याद है, बात तलवार के जन्मकाल से निकली थी और कलम की पैदाइश से होते गर्भनिरोधकों पर आकर टिक गई थी।

"...कपड़े से बने कंडोम के प्रयोग 1564 ई. में शुरू हो गए थे...।"

''कलम-तलवार के बीच यह नपुंसक औजार कहाँ से आ टपका" अविनाश अचकचा गया था।

''उसके बीच की ही चीज है?'' मैंने जोर देकर कहा था फिर मैं उसे विस्तार से 'रेडियो कार्बन डेटिंग' की पद्धति समझाता रहा। उसकी आँखें फैलती जा रही थीं।

''यूज्ड कंडोम की कार्बन डेटिंग कैसे करते होंगे?'' लगभग आतंकित होकर उसने पूछा था।

अविनाश बचपन का मित्र है। हम लोग कुछ वक्त तक उसके घर में किराएदार की हैसियत से रहे थे। दूसरी या तीसरी कक्षा तक स्कूल भी साथ जाते थे। वह पुस्तकों में समय व्यतीत करता था और मैं क्लास में स्वेटर बुनती सुंदर शिक्षिकाओं के उभारों से आँचल खिसकने का इंतजार करता था। जाहिर है, उसके ज्यादा नंबर आते थे।

उसका लंबा-चौड़ा परिवार था। कई छोटी हमउम्र लड़कियाँ उस घर में फुदकती रहती थीं। पर मैं आठ-दस साल बड़ी उसकी बहन को देख कौतूहल से भर जाता था।

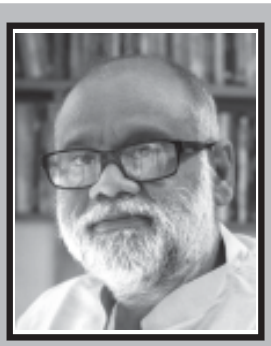

संजय सहाय

जन्म : 21 अक्टूबर, 1958, शिक्षा : वाणिज्य स्नातक। लम्बी कहानियां 'शेषांत' एवं 'मध्यांतर' व्यापक स्तर पर चर्चित। 'शेषांत' पर रजत कमल से पुरस्कृत फिल्म 'पतंग' का निर्माण। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां व लेख प्रकाशित। दो कहानी संग्रह–'सुरंग' और 'मुलाकात' प्रकाशित।
सम्प्रति : मासिक पत्रिका 'हंस' के संपादक हैं।
मोबाइल : 8800229316